झमझमा–झम बरसे पानी

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

झमझमा–झम बरसे पानी

झमझमा-झम बरसे पानी
कहता अपनी अमर कहानी।

कहीं बाढ़ है तो कहीं है सूखा
अमृत-जहर दोनों बन जाता
ठोस, द्रव्य, गैस के रूप दिखाता।

तरह-तरह के रंग-रूप बना कर
कभी डराता, कभी हंसाता
सीमा तोड़े तो मौत बांटता।

है धरा पर सौगात पानी
कहता अपनी अमर कहानी।

जीव-जंतु, पेड़-पौधे जिंदा इससे
इसे बचाओ सब जन मिलकर
बर्बाद न करो व्यर्थ बहाकर।

पेड़ लगाओ, पानी बचाओ
प्रकृति मित्र सब बन जाओ
धरती को सुंदर स्वर्ग बनाओ।

झमझमा-झम बरसे पानी
कहता अपनी अमर कहानी।।

मांझी करे पुकार

डग-मग-डग डोले नैया
उफान मारे नदिया की धार
मांझी करे पुकार
मेरे महबूब हैं उस पार

मिलन ना जाने कब होगा
वो चांद नम कब होगा
कुछ-कुछ कहती ये ठण्डी पुरवाई
डसती सांपिन सी जुदाई मांझी करे पुकार
मेरे महबूब हैं उस पार

पतझड़ बीता, सावन आया
पर उनका संदेशा अब तक ना आया
रातें हुईं हैं सदियों-सी
हृदय में यादें उनकी गहरी-सी
मांझी करे पुकार
मेरे महबूब हैं उस पार

भंवरों से लड़कर ही तो
गहरे दरिया को नैया करती है पार
मांझी करे पुकार
मेरे महबूब हैं उस पार।।

जल होगा तो कल होगा

जल होगा तो कल होगा।
नल होगा तो अपना हर पल होगा।।
पानी बचेगा तब सांसे बढ़ेंगी।
पानी से ही ठण्डी मलय समीर चलेंगी।।

हर मुरझाये चेहरे की दवा है पानी।
नानी की हर कहानी में भी पानी।।
बिन जल सभ्यताओं का खात्मा होगा।
इसीलिए तो जल होगा तो कल होगा।।

जीवन चले पानी से, बिन पानी सब ठहर जाता।
बूंद-बूंद पानी बचे तो घड़ा भी भर जाता।।
प्रण हम सब कर लें पानी बर्बाद न होगा।
क्योंकि जल होगा तो कल होगा।।

संपर्क करें:
मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'
ग्राम रिहावली, डाक–तौरौली गूजर
फतेहाबाद (आगरा) उत्तर प्रदेश–283 111
मो.नं. 9627912535